Dr Karuna Roy
Associate Professor
Hindi Department
S.g.g.s. College PatnaCity
e.mail- karuna-1812@
Yahoo.co.in

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
द्वितीय पत्र
तुम चंदन हम पानी - विद्यानिवास मिश्र
निबंध का कलात्मक वैशिष्ट्य

विद्यानिवास मिश्र भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि चिंतकों में से है। भारतीय परंपरा, सनातन जीवन मूल्यों को लेकर आग्रह अंत तक उनमें बना रहा। क्योंकि वह ऋग्वैदिक ऋषियों से लेकर कबीर, तुलसी, रैदास और भक्तिकाल के संतों-कवियों के चिंतन से प्रेरणा लेकर परंपरा भारतीयता को बांचते थे। हिन्दू धर्म को लेकर वह न तो सुरक्षात्मक बुद्धिजीवी थे और न ही उनका सनातन की खोज पर भरोसा कम हुआ। 'प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी" जैसी थी उनकी विनम्रता। हिन्दी साहित्य को अपने ललित और व्यक्तित्व प्रधान निबंधों तथा लोकजीवन से सुवासित करने वाले साहित्यकार मिश्रा जी ने आधुनिक विचारों को पारंपरिक सोच से जोड़ा था। उनका जन्म 28 जनवरी 1926 को हुआ था तथा निधन 14 फरवरी 2005 को हुआ। उन्हें 1999 में भारत सरकार ने साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

निबंध के प्रारंभ में निबन्धकार अपने बचपन की मधुर स्मृतियों में से एक प्रसंग की चर्चा करता है जब उसके पिता और दो पितृव्य (चाचा) सुबह-सुबह चंदन घिसकर पूजा करते थे, और पूजा के पश्चात बचे चंदन को उनके ललाट पर लगा देते थे। फिर उन्हें प्रसाद मिलता था। चंदन दो प्रकार के होते हैं — (1) मलयागिरि चंदन जो सुगंधित होता है और रक्त चंदन जो लाल होता है। मलयागिरि चंदन गौरी, गणेश, पार्थिव शिव आदि पर चढ़ाया जाता है और रक्त चंदन का प्रयोग देवी पर चढ़ाया जाता है और रविवार और नवरात्रि में इनका प्रयोग होता है। लेखक ने चंदन को घिसने और जीवन संघर्ष में सफलता रूपी सुगंध अर्जित करने में साम्यता दर्शायी है। रैदास कवि के भजन की पंक्ति है- प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हमारे भीतर जो 'चित्' का अंश है वह प्रभुजी के प्रति स्वयं को अर्पित करने से पूर्व स्वयं को जल रूपी जीवन के साथ छिड़काव करके रगड़ खाता है। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य का गुण, उसका आमोद और उसका चैतन्य अभिव्यक्त होते हैं।

चंदन का गुण होता है कि वह अपने आस-पास के वृक्षों को भी सुगंधित कर अपने समान बना देता है। बहुत सारे मनुष्यों में भी यह गुण होता है। गाँधी जी हों अथवा सुकरात उनका अनुकरण करने वालों की कमी नहीं। चंदन के वन दक्षिण भारत में बहुतायत से पाये जाते हैं इसलिए मलयानिल से सुवासित दक्षिणी पवन

के बारे में विद्यापति भी गीत गाते हैं। हमारे देश में ही हमारी संस्कृति से जुड़े इतने अधिक गौरवशाली परंपरायें हैं कि हमें अन्य किसी संस्कृति के पीछे दौड़ने की आवश्यकता नहीं। एक उदाहरण से विद्यानिवास मिश्र अपनी बात को स्पष्ट करते हैं। पूर्व की ओर मुंह कर के खड़े व्यक्ति की प्रदक्षिणा दक्षिण दिशा (दाहिने) घूमकर शुरू होती है। यदि पश्चिम दिशा से कोई उसे पुकारे तो उसे पीछे घूम कर देखना पड़ेगा। पीछे मुड़कर किसी से प्रेरणा ग्रहण करना उचित नहीं। इसीलिए वे पाश्चात्य देशों से आयातित संस्कृति का अंधानुकरण करने के पक्ष में नहीं हैं। वे प्रश्न करते हैं - "सबसे बड़ा सृष्टि में मूर्धन्य कौन है? यह मनुष्य है। वह क्यों न स्फीत होकर चले, क्यों वह विनीत होने को विवश हो?" उनका तात्पर्य है कि सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य है। उसे गिड़गिड़ाकर (याचक) नहीं चलना है बाहरी (अन्य) मनुष्यों के प्रति दास भाव की विनती क्योंकर वह करे? पीछे से आवाज देने पर व्यक्ति चौंककर देखता है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रति उनका आकर्षण बस इतना ही होना चाहिए। मुड़कर देखने पर यदि कोई नाशवान वस्तु दीख पड़े तो उसके लिए लालायित होने की आवश्यकता नहीं।

निबंधकार चंदन से संबंधित एक बहुप्रचलित प्रसंग को फिर से याद करते हैं। वह प्रसंग है विरह के कारण नायिका को चंदन शीतल न लगना अर्थात् दुखदायी लगना। कृष्ण जब मथुरा चले जाते हैं तब राधा को चंदन कठोर बाण की तरह प्रतीत होता है। चंदन के वृक्ष के तने पर सर्प लिपटे रहते हैं। राधा को चंदन लगाने पर चंदन की शीतलता का अनुभव न होकर उसमें लिपटे नागों के विष का अनुभव हो रहा है। कवियों की कल्पना का विलास भी उन्हें कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति से जोड़कर ही रखता है। लेखक ने जयदेव की पंक्तियाँ उद्धृत कर यह सिद्ध किया है कि चंदन निर्दयी है क्योंकि अपने मूल गुण शीतलता का त्याग कर वह राधा को विष से दग्ध कर रहा है। चंदन का मान तभी तक है जब चंदन की सुगंध से सराबोर होकर वह हिन्द महासागर के जल से चरणों को धोकर हिमालय तक पहुँच जाता है। मनुष्य का मान भी तभी तक है जब वह अपने आपको दूसरों के लिए उत्सर्ग करने को तत्पर है। नर और नारायण की एकता तभी संभव है जब नरों में उत्तम व्यक्ति नारायण की ओर उन्मुख हो। जब कोई व्यक्ति "नमो नारायण" कहकर दूसरे व्यक्ति का अभिवादन करता है तो वह नारायण के उसी एकीकृत रूप की महत्ता को स्वीकार करता है।

कुछ लोग "प्रभुजी हम चंदन तुम पानी' का अर्थ यह लगाते हैं कि चाहे जो भी प्रयत्न हो घिसना तो चंदन को ही है। लेकिन यह उलटबाँसी सही नहीं है क्योंकि प्रभु की अपार कृपा के आगे मनुष्य का जरा सा पानी किस काम का? "तो जरा-सा हमारा पानी लगता है और प्रभु का चंदन पसीज जाता है; पर हमारा छोटा-सा चंदन प्रभु की अपार कृपा सिंधु में होरसा समेत बह बह निकलेगा, फिर चंदन घिसने की बात भी समाप्त हो जायेगी।" (होरसा उस छोटी चौकी को कहते हैं जिसपर चंदन घिसा जाता है।) इस लिए प्रभुजी तुम चंदन हम पानी कहना ही उचित है। हम चंदन तुम पानी कहना नहीं। लेखक को स्मरण है कि उनके बड़े दादा मिट्टी से पार्थिव पूजा करते थे। अर्थात मिट्टी के शिव, गौरी गणेश बनाकर उनकी पूजा करते थे। चंदन चढ़ाने के पश्चात ही वे उन पर गंध, माला, धूप-दीप और नैवेद्य चढ़ाते थे। यह प्रतीक है कि पार्थिव सीमा में बंधे महादेवता को अपने पवित्रतम जीवन से शासित करने के पश्चात अपने जीवन की अपनी उत्कट इच्छाओं का घर्षण करके तभी उन्हें उन महादेव को प्रतिष्ठित कर पाते थे। जब सांसारिक वासनाओं का घर्षण करके उसे पूरी तरह से साधक उतार फेंकता है तब उसका चंदन बिना चढ़ाये भी अर्पित हो जाता है। तुलसीदास जी चंदन घिसते रह गये रघुवीर जी पर अर्पित करना भूल गये। रघुवीर स्वयं ही तिलक दे देते हैं तुलसीदास को। कुछ दुनियादारी में निपुण व्यक्ति (पुजारी) जानबूझकर अतिरिक्त चंदन घिस डालते हैं तो वे कई घरों में दान के लोगों में बाँट आते हैं। राजनीति के क्षेत्र में भी यही होता है। चंदन घिसना अर्थात मेहनत का कार्य छोटे कर्मचारी कार्यकर्ता करते हैं नेता तो सिर्फ आरती करने (अर्थात फीते काटने) के समय ही पधारते हैं।

निबंध के प्रथम भाग में लेखक ने मलयज चंदन के बारे में विश्लेषण किया है। "उसके पश्चात उन्होंने रक्त चंदन के उपयोग पर भी चर्चा की है — रक्त चंदन को घिसकर पुजारी जिसके मस्तक पर लगा देगा वह या तो पशु होगा या फिर वीर। पशु बलि के लिए तैयार किया जाता है रक्त चंदन लगाकर और वीर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सारे मोह से मुक्त होकर प्राणों के उत्सर्ग के लिए उद्यत हो जाता है। दोनो चंदनों की तुलना करते हुए विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं — "मलयज में प्रभु की कृपा अधिक खिलती है और अपना जीवन पावन अल्पमात्र लगता है; रक्तचंदन उतरने में देरी की प्रेरणा कम, अपने जीवन का रस अधिक लगता है।" इसलिए यह रक्तचंदन वक्रपंथ पर चलने वालों की उपासना में प्रयुक्त होता है।

काव्य के क्षेत्र में तुलसीदास और कालिदास दो अलग पथ के राही हैं। तुलसीदास ने शील को महत्व दिया है तो कालिदास उन्माद की हद तक राग

(प्रेम) के प्रतीक। तीसरे तरह के कवियों ने मलयज में केशर या (4)
हल्दी का रंग मिलाकर तिलक लगाया इसे रागात्मिका भक्ति कहते हैं।
सूरदास, हितहरिवंश, व्यास ऐसे ही कवि हैं। एक चौथा चंदन वैष्णव
भक्तों का है जिसे वे गोपी चंदन कहते हैं। यह उन गोपियों के सरोवर में स्नान
से उत्पन्न हुआ जिन्होंने सारे दुराव, आवरण और आत्म संकोच को
त्यागकर अपने आपको कृष्ण को अर्पित किया

अंत में निबंधकार इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि चंदन चाहे
रक्तचंदन हो अथवा मलयज, गोपी चंदन हो या केशर हल्दी से
मिश्रित चंदन यह हमारी विश्वभावना का शुभक खंड (छोटा टुकड़ा) है।
जिस पत्थर की चौकी (होरसा) पर हम चंदन घिसते हैं वह धरती पर
टिकी रहे डगमगाये नहीं। अर्थात हम अपने निश्चय पर दृढ़ रहें (जीवन
संग्राम में) और चंदन घिसने में जिस जल का उपयोग करें वह जल पवित्र
मंत्रों से युक्त हो। जैसे व्यक्ति देवताओं को चढ़ाने के पश्चात बचे चंदन को
अपने माथे पर लगाते हैं वैसे ही मानव विश्वभर में अपनी सुरभि का विस्तार
करने के पश्चात अपने सिर ललाट पर लगायें। चंदन हमारी परंपरा में
किस तरह समाया हुआ है उसका चित्र देखें — "ललाट हमारा चाहे चंदन
लगाने से घबराने लगे और चंदन लगाते ही हम अपने को दशहरे के हाथी जैसा
उपहासनीय मानने लगें; पर हमारे अंतर्मन में चंदन का छिड़काव अभी गीला
है, क्योंकि हमारे अक्षर ज्ञान के भीतर वह रागिनी अभी जगाती है, जिसके
द्वार किवाड़ चंदन के बनते हैं, जिसकी चौकी चंदन से गढ़ी जाती है,
जिसके द्वार पर चंदन का बिरवा रोपा जाता है, जिसके गलहार भी चंदन
के ही बनते हैं और जिस पर चंदन लिप्त हथेलियों की छाप पड़े बिना
मंगल विधि नहीं पूरी होती।"

इस निबंध में आपको लंबे लंबे वाक्यों में संस्कृत शब्दों से
परिपूर्ण शब्दावली पिरोयी हुई मिलेगी लेकिन इनका प्रतीकात्मक अर्थ
समझ आने के पश्चात अपूर्व ज्ञान से साक्षात्कार भी होगा। यदि मूल
निबंध में अर्थ ज्ञान की छोटी-से-छोटी बाधा भी उत्पन्न हो तो
आलंबन आप पूछ सकते हैं।

[signature]
mobile No - 9431881251